दीनानाथ श्रीवास्तव

दीनानाथ श्रीवास्तव

जन्मतिथि: 15 अक्तूबर 1935

जन्मस्थान : इटौरा, जनपद आगरा, उ. प्रदेश

माताश्री : स्व. श्रीमती रामश्री देवी श्रीवास्तव

पिताश्री : स्व. श्री गया प्रसाद श्रीवास्तव

शिक्षा : एम. ए. (अंग्रेज़ी, हिन्दी), बी. एड., साहित्यरत्न

प्रकाशन : 'ताज की छाया में समवेत कविता-संग्रह में 1950 में प्रथम गीत प्रकाशित। नसीराबाद हिन्दी साहित्य परिषद् के महामंत्री रहते हुए 'मरीचिका' और 'त्रिकाल' समवेत काव्य-संकलनों का सम्पादन व उनमें कविताएं प्रकाशित तथा 'उन्मेष' में गीत प्रकाशन । 'मरीचिका' पर हिन्दी साहित्य अकादमी उदयपुर से सहायता राशि प्राप्त। राजस्थान शिक्षा विभाग के समवेत कविता-संग्रहों - ' 'प्रस्तुति-2' व 'सहस्त्रधार' में गीत प्रकाशित। 'खुले पंख' व 'आहिस्ता-आहिस्ता' में भी गीत प्रकाशित। सुप्रसिद्ध साहित्यकार देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' द्वारा सम्पादित दोहा सप्तपदी-vii में दोहे प्रकाशित। जयपुर आकाशवाणी केन्द्र से समय-समय पर रचनाओं का प्रसारण एवं हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में समय-समय पर कविताओं का प्रकाशन । 'दुख ने तराशा मन' तथा 'कुहरे में सूर्यबिम्ब' (गीत-संग्रह) का अयन प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशन।

सम्प्रति : राजकीय शिक्षा सेवा (राजपत्रित) व दयानंद आर्य बालिका महाविद्यालय, ब्यावर के अंग्रेज़ी प्राध्यापक पद से मुक्त होकर स्वतंत्र लेखन। सम्पर्क : 2/2 श्री प्रसाद', साकेत नगर, ब्यावर (राजस्थान) 305901

दूरभाष : 01462-224341

पत्ता पत्ता बंदी जब अमराई का

कैसे गाये कोयलिया आज़ादी की

पत्ता पत्ता बंदी जब अमराई का।

डाल डाल पर पहरा गर्म हवाओं का

फूल फूल पर सौदा हुआ खिज़ाओं का

जंजीरों में बंधे वृक्ष गुमसुम खड़े

तम का पाहुन बेटा बन दिशाओं का।

कैसे खिलें चमन में सपनारी कलियाँ

कण्ठ रुद्ध होता हो जब तरुणाई का।

ज़हर बुझा सा मुक्त पवन बरसाने में

फुलबगिया को बेध चला अनजाने में

विष के जाम पिलाकर प्यासे भंवरों को

बेनकाब सौन्दर्य विके वीराने में।

सीमाएँ कैसे छोड़े तम का बागी

सूरज खुद महमान मेघ की खाई का।

किसको फुर्सत है रसधारा लाने की

जनमन के सुख की बाँसुरी बजाने की

कौन पराये मधुवन की बातें करे

घर घर प्यास बढ़ी जब सिंधु पचाने की।

बने पहरूए डोली के बटमारे जब

क्या इंसाफ दिलाये बोल दुहाई का।

तम की चूनर ओढ़ बढ़ रहा कोलाहल

कालीदह के हाथ बिक रहा जमुना जल

कली कली वीरान बन गई प्यास से

अमृत पी झंझा ने पग बाँधी पायल।

आँगन कैसे गूँजेगा किलकारी से

शिशु का कण्ठ दबाये कर जब दाई का

कभी न तुम मिले सजन

श्लथ हुए चरन

निहार कर थके नयन

मिल गये सभी, कभी न तुम मिले सजन

भार से कराहने लगा डगर डगर

प्यार से सराहने लगा नगर नगर

बीथि बीथि बन गई निगाह की थकन

रो पड़ी धरा विलोक, झुक गया गगन।

साँस साँस ज्योति पर्व सा मना रही

हर थकन किसी अज्ञान को बुला रही

आरती सुना रही है साँझ की शिकन

दीप बुझ चला निराश सो चली किरन ।

तिर रहा जहाज लो बुला उठी लहर

वन बरस उठे विवश बुला रही सहर

व्यर्थ हाथ मल उठा कगार का चमन

गा उठी विहाग राग दर्द की चुभन ।

मिल गये सभी कभी न तुम मिले सजन

तुम क्यों चपला से पल भर को मुस्काये

मैं तो अपनी अँधियारी को सह लेता

तुम क्यों चपला से पल भर की मुस्काये ?

माना था यह व्योम बटाओं से बोझल

माना था यह हृदय व्यथाओं से घायल

माना मेरे कदम मुझी से रूठे थे

गिरते पड़ते में मंजिल को पा लेता

तुम क्यों दो पग के संग को चलने आये ?

मेरा अपना कोई नहीं हुआ जग में

मेरा कोई बना न शूल भरे मग में

मेरी छाया तक ने मुँह फेरा मुझसे

मैं दुनिया भर की बिछुड़न को सह लेता

तुम क्यों नासमझी में संग देने आये ?

गरल लिये हर हाथ उठ रहा था मुझ पर

आग लिये हर साथ चल रहा था मुझ पर

मुझे मिटाने को हर दर्द हँसा था तो

मैं अपना मिटना भी हँस कर सह लेता

शशि ! क्यों क्षण भर का अमृत लेकर आये?

मैं तो अपनी अधियारी को सह लेता

तुम क्यों चपला से पल भर को मुस्काये ?

साभार- कीर्ति श्रीवास्तव, भोपाल, मध्य प्रदेश